[Conference-Composition of Colours :December,2014] ISSN- 2350-0530
DOI:https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v2.i3SE.2014.3669

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

मध्यकालीन पुस्तक चित्रो तथा लघु चित्रो में रंग

पवनेन्द्र कुमार तिवारी
सुभारती विश्वविद्यालय मेरठ

मध्यकालीन भारत में चित्रण के लिए रंग कई प्रकार के पदार्थो जैसे खनिजों योगिको अथवा प्राकृतिक लवणों से प्राप्त किये जाते थे। कुछ रंग प्राकृतिक वस्तुओं जैसे वनस्पति जैव पदार्थो से प्राप्त किये जाते थे। उदाहरण के लिए नीम तथा कृमिदाना आदि काजल का प्रयोग न केवल चित्रो में बल्कि लेखन कार्य में भी बडे पैमाने पर हुआ। इसी प्रकार लाल स्याही चाँदी तथा सोने में लिखा होने के कारण स्वणाक्षरी शेत्याक्षरी नाम दिया गया । लाल स्याही का प्रयोग अहमायो के अन्त में हाशिये खीचने में वृन्तों रेखाओं यंत्रों आदि में हुआ। स्वर्ण रजत चूर्ण से लिखी जाने वाली पुस्तके अधिक व्यय–साध्य थी उनमें वैभव–प्रदर्शन की भावना अधिक होती थी। चाँदी तथा स्वर्ण के अक्षरों को लिखना भी अपेक्षाकृत कठिन होता था तथा उसको पढने में भी आखो पर अधिक जोर पडता था। पश्चिम भारतीय चित्र–शैली में अधिकतर खनिज रंगों का प्रयोग किया गया है। इन्हें बारीक चूर्ण के रूप में लाकर रंग बनाया जाता था। रंगो की प्राकृतिक अवस्था अशुद्ध होती थी अतः उसको पानी में घोलकर निथारकर शुद्ध किया जाता था। भारी अशुद्धियाँ नीचे बैठ जाती थी तथा ऊपर का पानी निथारकर पृथक् कर लिया जाता था। इस क्रिया को कई बार दोहराकर रंग का शोधन किया जाता था इसे सुखाकर चित्रण–कार्य में प्रयुक्त करते थे। इस क्रिया को रंग धोना कहते थे।

काजल (स्याही)– अनेक रंगो की स्याहियों में काली स्याही का प्राधान्य रहा है। ताड़पत्रीय ग्रंथों, कपड़े तथा कागज के ग्रंथों पर अलग–अलग स्याहियों का प्रयोग किया गया है। मुनि पुण्यविजय जी ने ताड़पत्रीय तथा कागज पर लिखने की स्याहियों की तैयारी की कई विधियों का उल्लेख किया है किन्तु ये स्याहियाँ चित्रण में प्रयुक्त नहीं होती थी। मानसोल्लास तथा शिल्परत्न में एक मात्र काजल का उल्लेख चित्रकारों द्वारा प्रयोग में आना लिखा है। शिल्परत्न में काजल एकत्रित करने के लिये जो विधि दी है– एक मिट्टी के पात्र मे तेल भरकर उसमें बत्ती जलाई जाती थी। एक गहरा मिट्टी का बर्तन जिसकी तली में गोबर का लेप होता था इस दीपक पर उल्टा रक्खा जाता था। इस पर काजल जमा हो जाता था। यह काजल खुरचकर इसे नीम जल तथा गोंद में मिलाकर प्रयुक्त करते थे। एक अन्य विधि में नील वर्ण धातु (कदाचिद् एन्टिमनी) का बरीक चूर्ण बनाकर इसमें कपित्थ रस मिलाकर सुखाया जाता था और स्याहियाँ चित्रण में प्रयुक्त नहीं की जाती थीं कोई प्रमाण नहीं दिया। यह बात संभावित प्रतीत नहीं होती कि लिखने के लिये जैसे स्याही अनुभव और परम्परा से बनाई गई उपलब्ध हो उसे चित्रकार उपयोग से बहिष्कृत कर दें। राजस्थान के जैन साहित्य में लिखने की स्याही बनाने की अनेक विधियों का उल्लेख प्राप्त होता है जिसमें ताड़पत्र तथा कागज पर पुस्तक लेखन की स्याही की पृथक् विधियाँ दी हुई है। जबकि मानसोल्लास अथवा शिल्परत्न में प्रयोग का आधार नहीं दिया गया है। स्याही बनाने की विधियों का उल्लेख इस प्रकार है।

लघुचित्रों के चित्रण–विधान के लिए प्रत्येक केन्द्र पर एकरूपता दिखाई नहीं देंती। स्थानीय विशेषताओं और लोक–तत्वों के समावेश से प्रत्येक क्षेत्र की शैली तथा तकनीक प्रभावित होती रही है। कारीगर हों या कलाकर सभी अपने काम को करने में अपने व्यक्तिगत अनुभव को भी जोडते चले आए है। फिर भी मोटे तौर से भारतीय लघुचित्रों के चित्रण विधान में एकरूपता देखी जा सकती है। अनेक विद्वानों ने इस सामान्य प्रक्रिया के विवरण प्रस्तुत किये है जो अत्यन्त उपयोगी है। यह आवश्यक नहीं कि प्रत्सेक विद्वान् का मत शत–प्रतिशत एक–दूसरे से मेल खाता हो, फिर भी इन आलेख सूत्रों से हमें महत्वपूर्ण सूचनाएँ मिलती हैं।

चित्रकला विषयंक आदि कालीन ग्रंथ विष्णुधर्मोतर पुराण प्राचीनतम माना जाता है। इसका तीसरा भाग चित्रसूत्र है। जिसमें चित्रण–विधान के साथ मानवाकृति सम्बन्धित प्रमाण, रूप भेद तथा लक्षण आदि के विस्तृत विवरण दिये गये हैं। धार नरेश भोज द्वारा रचित समरांगण सूत्रधार ग्यारहवीं शताब्दी में रचा गया। इसकी भाषा में स्पष्टता नहीं है और विवरण भी संक्षिप्त है।

16वी शती में सफेदा नाम से मुगलों द्वारा जो सफेद रंग भारत में आया वह जिंक सफेद् था अथवा नहीं इसके लिये वैज्ञानिक विश्लेषण की आवश्यकता हैं।

शिल्परत्न में अस्तर लगाने के लिए प्रयुक्त सफेद रंग "धवल वर्ण" फूँके शंख से प्राप्त किया जाता था। इसे कपित्थ तथा नीम के गोंद के माध्यम से प्रयुक्त करते थे। मानसोल्लास में नीलगीरि की पहाडियों से प्राप्त "नागा" सफेद रंग वर्णित है जो केओलिन अथवा जिप्सम है।

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

जिंक सफेद तैयार करने के लिए अच्छा काशगर जिंक बारिक कपडे से छानकर "धौ" गोंद में घोला जाता है। इसे कई बार निखारकर शुद्ध रंग प्राप्त करते है।

लाल वर्ण– मानव स्वभाव इस रंगत से सर्वाधिक प्रभावित हुआ है। प्रकृति में लाल रंग पर्याप्त में पाया जाता है। लाल पत्थर मिट्टी आदि सभी में लौह ऑक्साइड के रूप में लाल रंग आभा देता है। इनमें पर्याप्त लौह अयस्क वाले रंग ही चित्रण में प्रयुक्त किये जाते है। मध्यकालीन संस्कृत साहित्य में लाल रंग की अनेक रंगतें वर्णित है।

गेरू– (इण्डियन रेड**)–** प्राचीन चित्रों में गेरू अत्यन्त उपयोगी रंग रहा है। किन्तु अपभ्रंश चित्रों में इसका प्रयोग संदेहजनक है। इसे पूरे एक दिन पत्थर पर घोटकर पानी से धोकर शुद्ध करते है।

सिन्दूर– (केसरिया**)–**यह अपभ्रंश चित्रों में विशेषकर कागज के ग्रंथों में बहुतायत से प्रयुक्त हुआ। सफेद लैड को खुली हवा से गर्म करके इसे प्राप्त किया जाता था। शिल्परत्न के अनुसार सिन्दुर को आधा दिन पानी में घोटा जाता था पुनः पाँच दिन बाद चौबीस घंटे यह क्रिया दोहराई जाती थी। नीम का गोंद माध्यम के रूप में प्रयुक्त होता था।

हिंगुल–(अशुद्ध सिनेबार, वर्मीलियन)– अशुद्ध सिनेबार को खरल में चीनी के पानी अथवा नींबू के रस के साथ घोटते है। हिंगुल नीचे बैठ जाता है तथा ऊपर का पीला निथार कर फेंक दिया जाता है। यह क्रिया पन्द्रह बार दोहराई जाती है। इसे पुनः चीनी के पानी के साथ अथवा नींबू के रस और गोंद के साथ घोटते है तथा भली प्रकार मिलाकर सुखा लेते है। हिन्दी में ईगुर तथा फारसी में इसका नाम शंगरफ है।

रैड आर्सोनिक (मनश्शिला)– यह चमकदार रंग है। यह आर्सेनिक का सल्फाइड है। इसका अत्यन्त अल्प हुआ है। चित्र लक्षण में इसका प्रयोग पीले रंग के लिये किये जाने का उल्लेख है।